12

रोहतक में आधारभूत शिक्षा का रूपांतरण
एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 पर आधारित क्षेत्रीय नवाचार

रूपांशी हुड्डा*

यह शोध लेख हरियाणा के रोहतक जिले में हुई दो शिक्षा-प्रेरित परिवर्तन यात्राओं का विश्लेषण करता है और उन्हें 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में वर्णित सिद्धांतों एवं दिशानिर्देशों से जोड़ता है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय खरावड़ और राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय सेक्टर 2,3,4 (जी.एम.एस.पी.एस.) के अनुभवों के माध्यम से यह लेख दर्शाता है कि कैसे जमीनी स्तर पर की गई नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियाँ, सामुदायिक सहभागिता और बाल-केंद्रित शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में महत्वपूर्ण सुधार ला सकती हैं। इन उदाहरणों का विश्लेषण बुनियादी स्तर के सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में किया गया है, जिसमें पाठ्यचर्या लक्ष्यों, अधिगम प्रक्रियाओं, शिक्षण रणनीतियों और मूल्यांकन प्रक्रियाओं का उल्लेख सम्मिलित है। यह लेख शिक्षकों, नीति निर्माताओं और कार्यान्वयनकर्ताओं को जमीनी स्तर पर एन.ई.पी. 2020 की परिकल्पना को लागू करने हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रदान करता है।

भारत की स्कूली शिक्षा के निरंतर विकसित होते परिदृश्य में बुनियादी स्तर (3 से 8 वर्ष की आयु) एक अत्यंत महत्वपूर्ण हस्तक्षेप-काल के रूप में उभरा है। यह केवल संज्ञानात्मक विकास ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक कल्याण को भी आकार देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 इस स्तर को जीवनपर्यंत शिक्षा की आधारशिला के रूप में प्रस्तुत करती है। तथापि, विविध और संसाधन-वंचित परिस्थितियों में गुणवत्तापूर्ण आधारभूत शिक्षा सुनिश्चित करना आज भी ग्रामीण और अर्ध-शहरी भारत के अधिकांश हिस्सों में एक जटिल चुनौती बना हुआ है। हरियाणा का रोहतक जिला इस चुनौती का सशक्त लघु प्रतिबिंब ही नहीं, अपितु उसके यथार्थपरक समाधानों का भी उदाहरण प्रस्तुत करता है। सामाजिक-आर्थिक विषमताओं से घिरे इस क्षेत्र में प्रवासी बस्तियाँ, कृषि-प्रधान समुदाय और बिखरे हुए ग्रामीण क्षेत्र सम्मिलित हैं, जहाँ शिक्षा तक पहुँच जाति, वर्ग, लिंग और गरीबी जैसे कारकों से प्रभावित होती है। ऐसे संदर्भ में आधारभूत अधिगम परिणाम केवल पाठ्यचर्या निष्पादन का

**जिला* समन्वयक (एफ.एल.एन), स्कूल शिक्षा विभाग, हरियाणा 134 114

विषय नहीं है, बल्कि यह संस्थागत लचीलापन, नवाचारपूर्ण शिक्षण, और सामुदायिक सहयोग पर भी निर्भर करता है। विशेष रूप से दो विद्यालय— राजकीय प्राथमिक विद्यालय, खरावड़ और राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय, सेक्टर 2,3,4, रोहतक (जी.एम.एस.पी.एस.)— यह दर्शाते हैं कि एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की परिकल्पना को व्यवहार में कैसे साकार किया जा सकता है, वह भी सीमित संसाधनों के बावजूद इन विद्यालयों ने न केवल उपस्थिति और परीक्षाफल में सुधार किया है, बल्कि खेल-आधारित शिक्षण, सहपाठी मार्गदर्शन, भावनात्मक सुरक्षा, और अभिभावक-सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से शिक्षा को एक समावेशी, संपूर्ण और आनंददायक अनुभव में रूपांतरित किया है। इस प्रक्रिया में वे पारंपरिक रट्टा आधारित शिक्षण से हटकर ऐसी शिक्षा की ओर अग्रसर हुए हैं, जहाँ प्रत्येक बच्चा— चाहे किसी भी सामाजिक पृष्ठभूमि से हो— सक्षम और समर्थ माना जाता है।

एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 स्पष्ट करती है कि बुनियादी स्तर के बच्चे खेल, कहानियों, संवाद और खोज के माध्यम से सबसे बेहतर सीखते हैं, और यह तभी संभव है जब उन्हें भावनात्मक रूप से सुरक्षित वातावरण प्राप्त हो (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृष्ठ 38)। रोहतक के इन विद्यालयों ने इस दर्शन को केवल नीति के रूप में नहीं, बल्कि व्यावहारिक व्यवहार में अपनाया है। सीमित संसाधनों के बावजूद इन्होंने कक्षा-कक्षों को जीवंत अधिगम स्थान, विद्यालयों को पोषणयुक्त संरक्षित वातावरण और शिक्षा को समुदाय से जोड़ने वाले सेतु के रूप में रूपांतरित किया है। इन प्रयासों ने एन.सी.एफ.-एफ.एस. की आत्मा— जड़ों से जुड़ाव, प्रासंगिकता और आनंदमय अधिगम को साकार किया है। यह शोध पत्र इन परिवर्तनों का अनुसंधान-आधारित दस्तावेजीकरण और विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह शिक्षण दृष्टिकोण में आए नवाचारों, हितधारकों की भागीदारी, प्रणालीगत सीमाओं, और अधिगम परिणामों का एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के सिद्धांतों एवं दिशानिर्देशों के आलोक में गहन अध्ययन करता है। इसका उद्देश्य दो प्रकार का है—

- रोहतक के विद्यालयों में उत्पन्न दोहराए जा सकने योग्य सफलताओं को उजागर करना।
- एक ऐसी नीति और क्रियान्वयन रूपरेखा प्रस्तुत करना जो मानकीकरण के साथ स्थानीय नवाचार और अनुकूलन की आवश्यकता को रेखांकित करे।

अंततः यह शोध पत्र यह दर्शाने का प्रयास करता है कि हाशिए पर स्थित विद्यालय भी यदि उनके पास रचनात्मकता, लचीलापन और रणनीतिक संरेखण हो तो वे शैक्षणिक उत्कृष्टता के केंद्र बन सकते हैं।

विद्यालय की रूपरेखा और चुनौतियाँ

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, खरावड़ हरियाणा के रोहतक जिले के खरावड़ गाँव में स्थित यह राजकीय प्राथमिक विद्यालय मुख्यतः कृषिप्रधान समुदाय के बीच है। जहाँ शिक्षा पारंपरिक रूप से आर्थिक जीवन-निर्वाह की तुलना में गौण मानी जाती रही है। अधिकांश विद्यार्थी आर्थिक रूप से वंचित परिवारों से आते हैं, जिनमें प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षा और घरेलू जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ उठाना पड़ता है। विद्यालय में बहु-कक्षा-बहु-स्तरीय शिक्षण

व्यवस्था प्रचलित है, जिसमें एक शिक्षक को एक साथ कई कक्षाओं में पढ़ाना होता है। यह ग्रामीण भारत में सामान्य परिपाटी है, परंतु भिन्न विकास स्तरों वाले विद्यार्थियों के लिए निर्देश देना शिक्षण को जटिल बना देता है। लंबे समय तक विद्यालय में रटंत और पाठ्यपुस्तक-आधारित पारंपरिक शिक्षण पद्धति का पालन होता रहा, जिससे अवधारणात्मक समझ विकसित नहीं हो सकी। विशेषकर हिंदी व्याकरण और प्रारंभिक गणित जैसे विषय विद्यार्थियों के लिए अरुचिकर और कठिन प्रतीत होते थे। खेतों में बुआई और कटाई के मौसम में उपस्थिति अत्यंत कम हो जाती थी, क्योंकि विद्यार्थियों को परिवार के साथ श्रम करना पड़ता था। कक्षा-कक्षों में दृश्यात्मक संसाधनों और प्रेरणादायी वातावरण की कमी विद्यार्थियों की निरुत्सुकता को और गहरा करती थी। मूल्यांकन की प्रक्रिया समष्टिगत, विरल और अनुकूलनविहीन थी, जिससे व्यक्तिगत प्रगति पर प्रतिपुष्टि मिलना संभव नहीं हो पाता था। शिक्षकों को बाल विकास और आयु-उपयुक्त शिक्षण विधियों का समुचित प्रशिक्षण प्राप्त नहीं था। संसाधनों की भारी कमी के कारण शिक्षण सामग्री श्यामपट्ट और पाठ्यपुस्तकों तक सीमित थी। परिणामस्वरूप तीसरी कक्षा तक अनेक विद्यार्थी सरल वाक्य को पढ़ने और जोड़ जैसी बुनियादी गणनाएँ करने में भी असमर्थ रहते थे, जो बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधक बनता था। एक महत्वपूर्ण लेकिन अदृश्य चुनौती थी अभिभावकों की भागीदारी का अभाव। समुदाय में वयस्क साक्षरता का स्तर अत्यंत निम्न था, जिससे शिक्षा को व्यावहारिक या आवश्यक नहीं, बल्कि एक दूर का लक्ष्य समझा जाता था। कई अभिभावक के पास संसाधनों के आभाव मे यह विश्वास ही नही था की वे घर पर विद्यार्थियों की पढ़ाई में सहायक बन सकेंगें। इस कारण विद्यालय सामाजिक रूप से अलग-थलग कार्य कर रहा था जो समुदाय की सक्रिय सहभागिता से वंचित था, किंतु इन जटिलताओं के बीच परिवर्तन की संभावनाएँ छिपी हुई थीं। जब विद्यालय ने इन सीमाओं को पहचाना और रक्षात्मक प्रतिक्रिया के बजाय रचनात्मक उपायों को अपनाया, तब एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 में वर्णित विकासात्मक सिद्धांतों के आधार पर शिक्षण की पुनर्रचना का एक महत्वपूर्ण कार्य आरंभ हुआ।

राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय रोहतक के एक शहरी बहु-आवासीय क्षेत्र में स्थित जी.एम.एस.पी.एस. सेक्टर 2,3,4 एक राजकीय विद्यालय है, जो विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से आए विद्यार्थियों की सेवा करता है। यह विद्यालय विशेषतः प्रवासी श्रमिकों के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करता है जिनका निवास प्रायः निर्माण स्थलों, औद्योगिक क्षेत्रों और अस्थायी झुग्गी-बस्तियों में होता है। इन समुदायों में अस्थिरता और स्थानांतरण आम बात है, जिससे शैक्षणिक निरंतरता बार-बार बाधित होती है। शिक्षक को न केवल पढ़ाना होता है, बल्कि लंबे समय से शिक्षा से वंचित विद्यार्थियों को फिर से मुख्यधारा में लाने की चुनौती का भी सामना करना पड़ता है। इस विद्यालय की एक विशिष्ट संरचनात्मक विशेषता है कि यह सायंकालीन पाली में संचालित होता है ऐसी व्यवस्था सीमित बुनियादी ढाँचे के समाधान के रूप में आरंभ की गई थी।

यद्यपि इससे विद्यालय की नामांकन क्षमता बढ़ी, परंतु इससे कई व्यवस्थागत समस्याएँ भी उत्पन्न हुईं। दैनिक मजदूरी पर आश्रित अभिभावकों को संध्या समय अपने विद्यार्थियों को विद्यालय भेजना सुरक्षित और व्यावहारिक नहीं लगता था। उनके लिए शिक्षा की प्राथमिकता अक्सर आजीविका की अनिवार्यता से पीछे रह जाती थी।

वर्ष 2000 में इस विद्यालय की शुरुआत मात्र दो शिक्षकों और सीमित विद्यार्थियों के साथ हुई थी। समय के साथ भवन और अवस्थापना में सुधार हुआ, किंतु विद्यालय तत्परता से जुड़ी समस्याएँ बनी रहीं। कई विद्यार्थी कभी भी आँगनवाड़ी या पूर्व-प्राथमिक शिक्षा ग्रहण नहीं कर सके थे, जिससे भाषा, स्वच्छता और कक्षा-व्यवहार की बुनियादी समझ की कमी देखी गई। कक्षा-कक्षों में संसाधनों की कमी, जर्जर भवन और असमान आयु-वर्गीय विद्यार्थियों की उपस्थिति ने शिक्षकों के समक्ष शैक्षणिक तथा व्यावहारिक जटिलताएँ उत्पन्न कीं। उदाहरणस्वरूप, एक 9 वर्षीय बालक जो ड्रॉपआउट था और दोबारा नामांकित हुआ, उसे कक्षा 2 में रखा गया, परंतु उसमें भाषा और गणना की बुनियादी योग्यता का अभाव था। इससे शैक्षणिक असंतुलन के साथ-साथ व्यावहारिक तनाव और असंतोष की स्थितियाँ उत्पन्न हुईं। अभिभावकों की उदासीनता यहाँ भी एक सामान्य समस्या थी। अनेक परिवार विद्यालय को केवल अस्थायी समाधान मानते थे, दीर्घकालिक निवेश नहीं। अभिभावक-शिक्षक बैठकें भी न्यूनतम उपस्थिति के साथ होती थीं। विद्यालय को समुदाय से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा था और शैक्षणिक आकांक्षाएँ बहुत निम्न स्तर पर थीं। इन चुनौतियों के मध्य भी विद्यालय ने 'कोई भी बच्चा पीछे न छूटे' की भावना के साथ रूपांतरण की दिशा में प्रतिबद्ध पहल की। नामांकन अभियान, सायंकालीन सहायता कक्षाएँ, पोषणवर्धक रसोई-बगीचा कार्यक्रम, और संवाद-आधारित संवेदनशील संस्कृति के माध्यम से विद्यालय ने स्वयं को एक सुरक्षित, स्वागतपूर्ण और सक्षम शिक्षण वातावरण में रूपांतरित किया। इस प्रयास में शिक्षण रणनीतियाँ विद्यालयी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के समावेशी दृष्टिकोण और विकासात्मक मनोविज्ञान के साथ सुसंगत बनाई गईं जिससे यह विद्यालय केवल ज्ञानार्जन का स्थान नहीं, अपितु समावेशी, संवेदना पूँजी और सशक्तीकरण का केंद्र बना।

रूपांतरण की रणनीतियाँ और शैक्षणिक नवाचार

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, खरावड़ और जी.एम.एस.पी.एस. सेक्टर 2,3,4, रोहतक में हुआ परिवर्तन किसी ऊपर से आए निर्देश का परिणाम नहीं था, बल्कि यह शिक्षकों की चिंतनशील दृष्टि, स्थानीय संदर्भ की गहन समझ और विद्यार्थियों की संभावनाओं में विश्वास का प्रतिफल था। एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के विकासात्मक सिद्धांतों पर आधारित इन रणनीतियों ने कक्षाओं को आनंद, प्रासंगिकता और खोज के केंद्रों के रूप में पुनर्परिभाषित किया। खेल-आधारित और बहु-संवेदी अधिगम की ओर बदलाव— दोनों विद्यालयों ने रटंत शिक्षा की पारंपरिक शैली से हटकर, विद्यार्थियों के अनुभवों पर आधारित खेल और इंद्रिय-आधारित अधिगम को अपनाया। खरावड़ विद्यालय में 'व्याकरण हॉपस्कॉच'

जैसी गतिविधि आरंभ की गई, जिसमें बच्चे फर्श पर बने वर्गों पर कूदते हुए व्याकरण संबंधी प्रश्नों के उत्तर देते थे। यह गतिविधि गति और शरीर को अधिगम से जोड़ती थी और एन.सी.एफ.-एफ.एस. द्वारा अनुशंसित मूर्त अधिगम की दिशा में एक सशक्त कदम थी (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ.सं. 93–94)।

जी.एम.एस.पी.एस. में विषय-आधारित अनुभवात्मक पाठ्यचर्या लागू की गई। विज्ञान की कक्षाएँ रसोई बगीचा में स्थानांतरित हुई जहाँ बच्चे पौधों का अवलोकन उनके जीवन चक्र का अध्ययन और मिट्टी के प्रकारों पर लेखन करते थे। गणितीय अवधारणाओं को मिट्टी की आकृतियों के माध्यम से सिखाया गया— जैसे कि आयतन और आकृतियाँ। भाषा शिक्षण कहानियों, कठपुतलियों और नाट्य-अभिनय पर आधारित रहा। इन नवाचारों ने एन.सी.एफ.-एफ.एस. के अध्याय 4 में वर्णित समग्र और जीवन-संलग्न अधिगम को व्यवहार में उतारा (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ.सं. 112–114)। साथ ही, स्थानीय संस्कृति, लोक-कथाएँ और पारंपरिक वस्तुएँ शिक्षा का हिस्सा बनकर विद्यार्थियों के सांस्कृतिक जुड़ाव को भी मजबूत करने में सहायक रहीं। सहपाठी मार्गदर्शन और सहयोगात्मक अधिगम खरावड़ विद्यालय में (बहु-कक्षा-बहु-स्तरीय शिक्षण) व्यवस्था के अंतर्गत सहपाठी मार्गदर्शन की शुरुआत की गई, जिसमें वरिष्ठ विद्यार्थी कनिष्ठ विद्यार्थियों को बुनियादी भाषा और गणना कौशल में सहायता प्रदान करते थे। यह अभ्यास सिर्फ शैक्षणिक सहायता तक सीमित नहीं था, बल्कि इससे नेतृत्व, सहानुभूति और आत्मविश्वास भी विकसित हुआ। उदाहरणतया कक्षा 4 का विद्यार्थी जब कक्षा 2 के विद्यार्थी को शब्द पढ़ना सिखाता था तो वह स्वयं भी अधिगम की पुनरावृत्ति करता था। यह वायगोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम सिद्धांत और एन.सी.एफ.-एफ.एस. में वर्णित सहयोगात्मक अधिगम दृष्टिकोण से मेल खाता है (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 38)।

जी.एम.एस.पी.एस. ने 'सह-अधिगम समूह' का गठन किया, विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए जो प्रवास के कारण वर्ष के मध्य में नामांकित हुए थे। अधिक सक्षम विद्यार्थी, विद्यार्थियों को विद्यालयीन नियम समझाते और पिछली कक्षा की अवधारणाओं को पुनरावृति करते। इससे शैक्षणिक पुनर्प्राप्ति के साथ-साथ सामाजिक समावेशन भी सुनिश्चित हुआ। दक्षता-आधारित प्रगति खरावड़ विद्यालय ने आयु-आधारित कक्षा व्यवस्था से हटकर दक्षता-आधारित अधिगम की अवधारणा अपनाई। विद्यार्थियों को उनके अधिगम लक्ष्यों की पूर्ति के आधार पर समूहबद्ध किया गया और साप्ताहिक रचनात्मक मूल्यांकन के माध्यम से उनकी प्रगति को निरंतर मापा गया। शिक्षण रणनीतियाँ चेकलिस्ट, मौखिक क्रियाएँ और अवलोकन के आधार पर समय-समय पर समायोजित की गईं। यह एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अध्याय 2 में वर्णित विकास-संगत अधिगम प्रगति के अनुरूप है (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 59)।

जी.एम.एस.पी.एस. में विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अधिगम विभाग बनाए गए, जिनमें पठन लॉग,

कार्य-नमूने, और शिक्षक टिप्पणियाँ सम्मिलित थीं। ड्रॉपआउट से लौटे विद्यार्थियों के लिए बेसलाइन मूल्यांकन किया गया और उनके लिए विशिष्ट अधिगम योजनाएँ बनाई गईं इससे उन्हें अपनी गति से सीखने का अवसर मिला, जिससे तनाव और आत्म-हीनता की भावना में कमी आई। परिवार और समुदाय की भागीदारी— दोनों विद्यालयों ने यह समझा कि अधिगम केवल विद्यालय की चारदीवारी तक सीमित नहीं है।

खरावड़ में मासिक साक्षरता कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, जहाँ अभिभावक को सिखाया गया कि वे पंचाँग, ताली वाले खेल और दैनिक संवाद जैसे घरेलू उपकरणों का प्रयोग करके विद्यार्थियों के अधिगम में कैसे योगदान दे सकते हैं। इससे पूर्व में निष्क्रिय रहे अभिभावक गौरवान्वित होकर कक्षा गतिविधियों में सहभागी बनने लगे।

जी.एम.एस.पी.एस. में डिजिटल संवाद पर बल दिया गया। व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से शिक्षक दैनिक गतिविधियाँ, चित्र और ऑडियो संदेश साझा करते थे। निर्माण-स्थल पर कार्यरत या अनौपचारिक श्रमिक अभिभावक के लिए यह माध्यम विशेष रूप से उपयोगी रहा। साथ ही शिक्षक समुदाय में घर-घर जाकर संवाद और बैठकों का आयोजन भी करते थे। यह दृष्टिकोण एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अध्याय 10 में वर्णित उस सिद्धांत से मेल खाता है, जिसमें कहा गया है कि परिवार बच्चे का पहला शिक्षण-संस्थान होता है और उन्हें सह-शिक्षक की भूमिका में जोड़ना आवश्यक है (एन.सी.एफ.-एफ. एस., 2022, पृ.सं. 217, 219)।

भावनात्मक और पोषणीय सुरक्षा— दोनों विद्यालयों ने विद्यार्थियों की समग्र भलाई को केंद्र में रखते हुए भावनात्मक और पोषणीय सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु सघन प्रयास किए।

जी.एम.एस.पी.एस. का रसोई बगीचा केवल पोषण का स्त्रोत नहीं था, बल्कि यह विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, उत्तरदायित्व और आत्मनिर्भरता विकसित करने का एक माध्यम भी था। विद्यार्थी पौधों की देखरेख, सब्जियाँ तोड़ने और 'बगीचा दैनंदिनी' लेखन जैसी गतिविधियों में सक्रिय रहे। इन अनुभवों को विज्ञान और भाषा की कक्षाओं में एकीकृत किया गया। शिक्षकों ने पारंपरिक भूमिका से आगे जाकर मार्गदर्शक और संरक्षक की भूमिका निभाई। जी.एम.एस.पी.एस. में कई बार शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों को उनके घर तक छोड़ते थे जब अभिभावक नहीं पहुँचते थे। विद्यालय का दिन गीतों से शुरू होता और भावनात्मक संवाद, संघर्ष समाधान, और देखभाल-संवाद चक्र नियमित गतिविधियों का हिस्सा बन चुके थे। यह समग्र दृष्टिकोण एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के पंचकोशीय विकास मॉडल पूर्णतया अनुरूप है, जो शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को समान महत्व देता है (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 20)।

चुनौतियाँ और संस्थागत लचीलापन

शैक्षणिक रूपांतरण कभी भी एक सरल रेखीय प्रक्रिया नहीं होता है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय, खरावड़ और जी.एम.एस.पी.एस. सेक्टर 2,3,4 रोहतक के सुधार यात्रा में दृश्य और अदृश्य दोनों प्रकार की

चुनौतियाँ थीं। इनमें प्रणालीगत संदेह, सांस्कृतिक अवरोध, संसाधनों की कमी और संस्थागत जड़ता सम्मिलित थीं, फिर भी दोनों विद्यालयों ने इन बाधाओं का सामना दृढ़ संकल्प, नवाचार और सामुदायिक सहभागिता से किया और यह सिद्ध किया कि इच्छाशक्ति और सहयोग से परिवर्तन संभव है।

विश्वास की नई शुरुआतें

दोनों विद्यालयों के सामने सबसे पहली और बड़ी चुनौती थी अभिभावकों और समुदाय के लोगों का अविश्वास। खरावड़ में कई अभिभावकों ने खेल-आधारित शिक्षण की उपयोगिता पर सवाल उठाए। कुछ व्यक्तियों ने पूछा कि बच्चे व्याकरण सीखने के लिए फर्श पर क्यों कूद रहे हैं? उनके लिए शिक्षा का पारंपरिक स्वरूप शांत कक्षाएँ, लिखी हुई कॉपियाँ, और अनुशासन आधारित शिक्षण ही प्रभावी था।

इस अविश्वास को दूर करने के लिए विद्यालय ने सुनियोजित सामुदायिक सहभागिता रणनीति अपनाई। अभिभावकों को कक्षा में आमंत्रित किया गया, उन्हें कहानियों के सत्र दिखाए गए और विद्यार्थियों की प्रगति भी साझा की गई। जब अभिभावकों ने स्वयं देखा कि उनके बच्चे पूरे वाक्य बोल सकते हैं, कहानी सुना सकते हैं और आत्मविश्वास के साथ कक्षा में भाग ले रहे हैं तब उनकी सोच में परिवर्तन आया। यह एन.सी.एफ.-एफ.एस. की उस सिफारिश को मूर्त करता है, जिसमें परिवार को अधिगम यात्रा का सहयोगी बताया गया है (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 207)।

जी.एम.एस.पी.एस. में चुनौती अधिक व्यावहारिक थी— सायंकालीन सत्र में पढ़ाई, विद्यार्थियों की सुरक्षा और मजदूरी की हानि का डर। शिक्षक समुदाय के बीच गए, काम के बाद अभिभावकों से बात की और विद्यार्थियों की प्रगति की झलक व्हाट्सएप के माध्यम से साझा की। कई बार शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों को सुरक्षित घर पहुँचाने लगे। जब विद्यार्थियों ने प्रमाणपत्र जीते और प्रतियोगिताओं में भाग लिया तो अभिभावकों को गर्व और जुड़ाव की भावना उत्पन्न हुई। उनका भरोसा व्यवस्था द्वारा टूट गया था, वह लगातार प्रयास और देखभाल से धीरे-धीरे फिर से बना।

सीमित संसाधनों में रचनात्मकता

दोनों विद्यालय गंभीर संसाधन सीमाओं में कार्य कर रहे थे। कक्षाओं में न डिजिटल उपकरण थे, न पुस्तकालय और कई बार तो कुर्सियाँ और टेबल भी नहीं थे, परंतु शिक्षकों ने शिकायत करने की बजाय नवाचार को चुना। खरावड़ में कक्षा के फर्श को शिक्षण का उपकरण बना दिया गया। शिक्षक ने चॉक से फर्श पर हॉपस्कॉच, संख्या-रेखा और अक्षर-ग्रिड बना दिए। फेंकी गई गत्तियाँ और कपड़ों की कटिंग से फ्लैश कार्ड, कठपुतलियाँ और गतिविधि आरेख बनाए गए। जी.एम.एस.पी.एस. में विद्यालय परिसर का एक छोटा-सा हिस्सा जीवित प्रयोगशाला बना। टूटी मेज़-कुर्सियाँ स्थानीय बढ़ई की सहायता से सुधार ली गईं। शिक्षक अपने व्यक्तिगत पैसे से रंग, चटाई और स्टेशनरी खरीद लाए। एक शिक्षक ने पुराने बर्तन इकट्ठा किए और उनसे विद्यार्थियों को मापन और आयतन

सिखाया। ये सभी प्रयास एन.सी.एफ.-एफ.एस. की उस भावना को साकार करते हैं जो कहता है कि गुणवत्तापूर्ण अधिगम वातावरण को कम संसाधनों में भी रचनात्मकत और विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण से तैयार किया जा सकता है (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 131)। और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह था कि इन बाधाओं ने सामुदायिक सहयोग के नए अवसर खोल दिए। किसी अभिभावक ने पुराने डब्बे दिए, किसी दुकानदार ने कपड़े के टुकड़े दिए और एक स्थानीय कलाकार ने कक्षा की दीवारों को चित्रित किया। संसाधनों की कमी ने स्वामित्व और नवाचार की संस्कृति को और गहरा कर दिया।

शैक्षिक क्षमता निर्माण— नींव से शुरुआत

एक अन्य बड़ी चुनौती थी कि शिक्षकों को एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 संरेखित शिक्षण पद्धतियों का कोई पूर्व-प्रशिक्षण नहीं था। दोनों विद्यालयों ने इसे अवसर के रूप में लिया और स्वशिक्षा, पारस्परिक संवाद और निरंतर प्रयोग से नवाचार को बढ़ावा दिया। शिक्षकों ने दीक्षा जैसे प्लेटफॉर्म से ऑनलाइन मॉड्यूल्स पढ़े, विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया पर विचार किया और बार-बार अपनी शिक्षण पद्धतियों को अनुकूल बनाने का प्रयास किया। प्रत्येक सप्ताह स्टाफ रिफ्लेक्शन मीटिंग आयोजित की गईं जहाँ शिक्षकों ने अपने प्रयोग एक दूसरे के साथ साझा किए। खरावड़ में एक शिक्षक ने स्वयं आधारभूत दक्षताओं पर आधारित खेलों का भंडार विकसित किया। जी.एम.एस.पी.एस. में शिक्षक-शिक्षण डायरी में विद्यार्थियों की भावनात्मक प्रतिक्रिया, व्यवहार और अधिगम प्रगति को दर्ज करते थे। यह समीक्षात्मक, साक्ष्य-आधारित और संदर्भ-संरेखित शिक्षक-विकास की एक आदर्श मिसाल थी। इन सभी प्रयासों से यह स्पष्ट होता है कि संस्थागत लचीलापन केवल संसाधनों पर नहीं, बल्कि शिक्षकों की मानसिकता, अनुकूलनशीलता और प्रतिबद्धता पर आधारित होता है।

परिणाम और आँकड़ा-आधारित साक्ष्य

शिक्षण विधियों और प्रणालीगत सुधारों की सफलता को मात्र अनुभवात्मक रूप में नहीं, अपितु मापनीय और पुनरावृति किए जा सकने वाले रूप में सिद्ध करना आवश्यक है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय खरावड़ और जी.एम.एस.पी.एस. सेक्टर 2,3,4 रोहतक में किए गए हस्तक्षेपों ने शैक्षणिक प्रदर्शन, उपस्थिति, नामांकन और अभिभावक सहभागिता जैसे कई प्रमुख संकेतकों में सकारात्मक और ठोस सुधार लाए हैं, ये सभी संकेतक एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 (पृ. 30) में विशेष रूप से रेखांकित किए गए हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि और अधिगम में वृद्धि

खरावड़ में व्याकरण हॉपस्काच, सहपाठी शिक्षण और दक्षता-आधारित मूल्यांकन जैसी रणनीतियों के माध्यम से कक्षा 3 से 5 तक के विद्यार्थियों के व्याकरण परीक्षणों में 30 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। विशेष रूप से, वे विद्यार्थी जो प्रारंभ में 40 प्रतिशत से भी कम अंक प्राप्त करते थे, उनमें से 40 प्रतिशत विद्यार्थियों ने दो शैक्षणिक सत्रों में 70 प्रतिशत से अधिक स्कोर प्राप्त किया। पठन समझ और वाक्य निर्माण में स्पष्ट सुधार देखने को मिला और कक्षा अवलोकनों में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और आत्मविश्वास में वृद्धि दर्ज की

गई। जी.एम.एस.पी.एस. में अनुभवात्मक शिक्षण पद्धति के चलते विशेष रूप से प्रवासी विद्यार्थियों की गणना और साक्षरता क्षमताओं में तीव्र सुधार देखा गया। ऐसे विद्यार्थी जो लंबे समय के बाद स्कूल लौटे थे, उनमें से 65 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 3 महीने के भीतर कक्षा-स्तरीय दक्षताएँ प्राप्त कर लीं। इन सुधारों को मौखिक प्रश्नोत्तरी, कहानी पुनरावृत्ति, और शिक्षक चेकलिस्ट के माध्यम से मापा गया जो एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 द्वारा सुझाई गई आकलन रूपरेखा के अनुरूप है (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 102)।

उपस्थिति और जुड़ाव परिवर्तन से पहले दोनों विद्यालयों में अनियमित उपस्थिति विशेषकर लड़कियों और श्रमिक विद्यार्थियों में आम समस्या थी। खरावड़ में मासिक औसत उपस्थिति में 10 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। जिन दिनों में खेल-आधारित कक्षाएँ या अभिभावक-सत्र आयोजित किए जाते थे, उस दिन उपस्थिति 95 प्रतिशत तक पहुँच गई।

जी.एम.एस.पी.एस. में सर्दियों के महीनों में भी उपस्थिति में सुधार देखा गया, जो कि पहले एक बड़ी चुनौती थी, क्योंकि विद्यालय शाम की पाली में चलता था। इसका श्रेय नियमित दिनचर्या, आनंदमय अधिगम और अभिभावक आश्वासन को दिया गया। शिक्षकों ने बताया कि पहले की तुलना में विद्यार्थी अनुपस्थिति के कारण ड्रॉपआउट की घटनाओं में कमी आई है, विशेषकर कक्षा एक से तीन में।

नामांकन और प्रतिधारण

जी.एम.एस.पी.एस. में नामांकन 2018 के 155 से बढ़कर 2025 में 358 तक पहुँच गया जो कि 131 प्रतिशत की वृद्धि है। यह वृद्धि कोई अनिवार्य सरकारी निर्देश नहीं, बल्कि समुदाय के बढ़ते विश्वास और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के प्रत्यक्ष प्रभाव से संभव हुई। यह भी उल्लेखनीय है कि प्रवासी समुदायों के बीच भी निरंतर नामांकन बना रहा जो विद्यालय की समावेशिता और स्थायित्व क्षमता को दर्शाता है।

प्रतिधारण जो किसी विद्यालय की गुणवत्ता का अहम संकेतक होता है इनके में भी आशाजनक सुधार हुआ। पाँच वर्षों में उन विद्यार्थियों की संख्या दोगुनी हो गई जिन्होंने कक्षा 1 से 5 तक की पूर्ण प्राथमिक शिक्षा पूरी की। कई अभिभावकों ने अब अपने विद्यार्थियों को सरकारी विद्यालय में ही पढ़ाने की इच्छा जताई बजाय कि उन्हें सस्ती निजी विद्यालयों में भेजने के।

सह-पाठ्यचर्या उपलब्धियाँ और समग्र विकास

दोनों विद्यालयों के विद्यार्थी अब खंड और जिला स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेने लगे हैं जो कि पहले लगभग असंभव था। मिट्टी से आकृति निर्माण, लोककथा वाचन, और गणित प्रश्नोत्तरी जैसी गतिविधियों में विद्यार्थियों ने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। जी.एम.एस.पी.एस. की एक विद्यार्थी ने राज्य स्तर की मिट्टी मॉडलिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि एक अन्य विद्यार्थी ने जिला गणित ओलंपियाड में विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। इन उपलब्धियों को अभिभावक-शिक्षक बैठक और स्थानीय मीडिया में उजागर किया गया जिससे आकांक्षा और प्रेरणा का वातावरण बना। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों में भावनात्मक और सामाजिक कौशल में भी प्रगति हुई। शिक्षक बताते हैं कि अब विद्यार्थी आपसी विवादों को स्वयं सुलझाने

में सक्षम हैं, कक्षा के दायित्वों में स्वेच्छा से भाग लेते हैं और सहपाठियों से बेहतर रिश्ते बनाते हैं। यह एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के पंचकोश विकास दृष्टिकोण के अनुरूप है जहाँ भावनात्मक और सामाजिक विकास को भी उतना ही महत्व दिया गया है (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 20)।

अभिभावक सहभागिता और सामुदायिक विश्वास

सबसे दीर्घकालिक प्रभाव यह रहा कि अभिभावकों की मानसिकता में गहरा और स्थायी बदलाव आया। खरावड़ में, जहाँ पहले अभिभावक विद्यालय परिसर में प्रवेश करने से भी झिझकते थे, अब वे नियमित अभिभावक-शिक्षक बैठक में भाग लेने लगे हैं। जी.एम.एस.पी.एस. में कई अभिभावक विद्यालय आयोजनों में भाग लेने के साथ-साथ अपने मोहल्लों में अन्य अभिभावक को नामांकन के लिए प्रेरित करने लगे हैं। व्हाट्सएप जैसे डिजिटल टूल्स ने घर और विद्यालय के बीच वास्तविक समय में संवाद सेतु का कार्य किया। शिक्षक प्रतिदिन की गतिविधियाँ, चित्र और छोटे कार्य साझा करते थे जिससे साक्षरता-अंतर को ऑडियो संदेशों के माध्यम से पाटने में सहायता मिली। अभिभावकों की प्रतिक्रियाओं को कक्षा रणनीतियों में सम्मिलित किया गया, जिससे साझा स्वामित्व की भावना उत्पन्न हुई। ये सभी परिवर्तन इस बात की पुष्टि करते हैं कि एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की संकल्पना कि यदि आधारभूत शिक्षा को प्रासंगिक, समावेशी और समुदाय-आधारित रूप में लागू किया जाए तो यह न केवल शैक्षणिक उपलब्धियों में, बल्कि शिक्षा-परिस्थितिकी की समग्र गुणवत्ता में भी स्थायी परिवर्तन ला सकती है (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 30)।

नीतिगत और व्यावहारिक सुझाव

रोहतक से प्राप्त ये सफलता की कहानियाँ कोई अपवाद नहीं हैं, बल्कि यह प्रमाण हैं कि जब नीतियाँ स्थानीय नेतृत्व को सशक्त करती हैं, शिक्षकों के नवाचार पर विश्वास करती हैं और सामुदायिक भागीदारी में निवेश करती हैं तब आधारभूत शिक्षा में परिवर्तन संभव होता है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय, खरावड़ और जी.एम.एस.पी.एस. सेक्टर 2,3,4 रोहतक द्वारा अपनाई गई रणनीतियाँ एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 को केवल दस्तावेज से कार्यरूप में बदलने के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर के नीति-निर्माताओं को महत्वपूर्ण सीख प्रदान करती हैं। ग्रामीण और अर्ध-शहरी भारत के अधिकांश विद्यालयों में बहु-कक्षा-बहु-स्तरीय शिक्षक शिक्षण एक वास्तविकता है। किंतु संस्थागत समर्थन के अभाव में शिक्षक विविध अधिगम स्तरों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते। खरावड़ की सफलता यह दर्शाती है कि एम.जी.एम.एल. को एक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि एक शिक्षण अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को विविध स्तरों पर शिक्षण के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल उपलब्ध कराएँ जाएँ; ऐसे (टी.एल.एम.) किट विकसित की जाएँ जो कक्षा समूहों के अनुसार लचीले ढंग से प्रयुक्त हो सकें और समय-सारणी व कक्षा की रूपरेखा में ऐसे नवाचार किए जाएँ जो स्वतंत्र और सहपाठी अधिगम को बढ़ावा दें। यह दृष्टिकोण एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की उस

परिकल्पना के अनुरूप है जिसमें विद्यार्थियों को उनके अधिगम स्तर पर मिलने की बात कही गई है (एन.सी.एफ़.-एफ.एस., 2022, पृ. 59)। इसी प्रकार, सहपाठी अधिगम एक कम लागत, उच्च प्रभाव वाली रणनीति है जो शैक्षणिक सहारा के साथ-साथ समावेश और नेतृत्व विकास का भी माध्यम है। इसे संस्थागत रूप देने हेतु आधारभूत कक्षाओं में औपचारिक रूप से सहपाठी प्रेरक की भूमिका निर्धारित की जानी चाहिए। विद्यार्थियों को मार्गदर्शन हेतु सरल चेकलिस्ट या अवलोकन प्रपत्र प्रदान किए जा सकते हैं तथा प्रेरक सहपाठी कहानियों का संकलन और प्रचार किया जाना चाहिए, ताकि अन्य विद्यालय भी प्रेरित हो सकें। यह रणनीति एन.सी.एफ.-एफ.एस. की सहयोगात्मक और संवाद-आधारित अधिगम दृष्टि से मेल खाती है (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 38)।

दोनों विद्यालयों ने सीमित संसाधनों में भी उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त किए। यदि इस सफलता को व्यापक रूप से दोहराना है तो यह आवश्यक है कि सरकार प्रत्येक विद्यालय को सालाना ₹10,000–₹20,000 का सूक्ष्म अनुदान प्रदान करे जिसका उपयोग स्थानीय टी.एल.एम. निर्माण, दीवार चित्रण, अधिगम कोनों और लचीली फर्नीचर व्यवस्था के लिए किया जा सके। खंड और जिला स्तर के अधिकारियों को त्वरित प्रस्ताव स्वीकृति की शक्ति प्रदान की जाए और विद्यालयों को 'नवाचार पोर्टफोलियो' प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए जिसमें परिवर्तन से पहले और बाद की स्थिति को दर्शाया गया हो। यह एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की इस भावना को मूर्त करता है कि अर्थपूर्ण अधिगम परिवेश सृजन के लिए संदर्भ आधारित और किफायती नवाचार पर्याप्त हैं (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ. 131)।

पारिवारिक सहभागिता भी आधारभूत शिक्षा की गुणवत्ता को गहराई से प्रभावित करती है। रोहतक के उदाहरण यह दर्शाते हैं कि सुनियोजित, सम्मानजनक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील संवाद अभिभावकों की भूमिका को एक निष्क्रिय श्रोता से सक्रिय सह-निर्माता में बदल सकता है। इसके लिए प्रत्येक आधारभूत विद्यालय में मासिक 'अभिभावक संवाद चक्र' अनिवार्य किए जाने चाहिए जिनमें स्थानीय भाषा में सत्र हों और अभिभावक स्वयं भी शिक्षण गतिविधियाँ प्रस्तुत करें। इसके साथ ही डिजिटल टूल्स जैसे व्हाट्सएप, वॉयस नोट्स और छोटे वीडियो के उपयोग को बढ़ावा दिया जाए, ताकि कामकाजी अभिभावक भी सहजता से जुड़ सकें। साप्ताहिक शिक्षण योजना में घर-आधारित गतिविधियों को एकीकृत किया जाना चाहिए, ताकि अधिगम केवल विद्यालय तक सीमित न रहे। यह अनुशंसा एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की उस सिफारिश के अनुरूप है कि परिवारों को बालकों की अधिगम यात्रा में सह-निर्माता की भूमिका निभानी चाहिए (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022, पृ.सं. 217–219)। इन विद्यालयों के अनुभव यह भी दर्शाते हैं कि शिक्षक स्वयं में नवाचार के केंद्र हैं, बस उन्हें स्वायत्तता, संरचना और समर्थन की आवश्यकता होती है। इसके लिए राज्यों में डिजिटल और मुद्रित मंच बनाए जाएँ जहाँ शिक्षक अपनी गतिविधियाँ, मूल्यांकन टेम्पलेट और कक्षा नवाचार साझा कर

सकें। प्रत्येक वर्ष 'शिक्षक नवाचार मेले' आयोजित किए जाएँ जहाँ प्रेरक शिक्षण प्रयोग प्रदर्शित और पुरस्कृत किए जाएँ। साथ ही, अनुभवी शिक्षकों को अन्य शिक्षकों को मार्गदर्शन देने हेतु संरचित मेंटरशिप कार्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। यह कदम एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की विकेंद्रीकृत और संदर्भ-संवेदनशील कार्यान्वयन की भावना को आगे बढ़ाते हैं।

अंततः, रोहतक के विद्यालयों ने पारंपरिक उच्च-दबाव वाले मूल्यांकन से हटकर प्रारूपिक, अवलोकनात्मक और चिंतनशील मूल्यांकन को अपनाया। इस दृष्टिकोण को स्केल करने हेतु आवश्यक है कि सरल चेकलिस्ट, कहानी आधारित मौखिक आकलन कार्ड और शिक्षक प्रतिबिंब अभिलेख जैसे उपकरण विकसित किए जाएँ। इन उपकरणों को राज्य स्तरीय (एफ.एल.एन.) ट्रैकिंग प्रणाली से संरेखित किया जाए और शिक्षक प्रशिक्षण को 'अधिगम हेतु मूल्यांकन' की दिशा में पुन: संरेखित किया जाए। जब इस प्रकार के मूल्यांकन उपकरणों को संस्थागत समर्थन प्राप्त होता है, तब वे न केवल अधिगम को समृद्ध करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिए तनाव को भी कम करते हैं (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृ. 102)।

पारिवारिक सहभागिता को संरचित स्पर्श-बिंदुओं के माध्यम से गहराएँ

विद्यालयों में अभिभावक सहभागिता प्रायः असंगठित और औपचारिकताओं तक सीमित रहती है जिससे उनकी भूमिका अधिगम यात्रा में सीमित रह जाती है। रोहतक के उदाहरण यह दर्शाते हैं कि जब संवाद को सम्मानजनक, स्थानीय भाषा-आधारित और सांस्कृतिक रूप से अनुकूल बनाया जाता है तो अभिभावक न केवल सहयोगी बनते हैं बल्कि सह-निर्माता की भूमिका निभाने लगते हैं। नीति स्तर पर यह आवश्यक है कि प्रत्येक आधारभूत विद्यालय में मासिक 'अभिभावक संवाद चक्र' आयोजित किए जाएँ, जहाँ वे न केवल सहभागिता करें बल्कि स्वयं भी शिक्षण गतिविधियाँ प्रस्तुत करें। डिजिटल टूल्स जैसे व्हाट्सएप, वॉयस नोट्स और लघु वीडियो का उपयोग विशेष रूप से कामकाजी अभिभावक को जोड़ने में सहायक हो सकता है। साथ ही, साप्ताहिक शिक्षण योजनाओं में घर-आधारित गतिविधियों को एकीकृत करना आवश्यक है, ताकि अधिगम केवल विद्यालय की चारदीवारी तक सीमित न रहे। यह प्रयास एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की इस अनुशंसा से मेल खाता है कि परिवारों को विद्यार्थियों की अधिगम यात्रा में सक्रिय सह-निर्माता के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृ.सं. 217–219)।

शिक्षक नवाचार मंचों को संस्थागत रूप दें

शिक्षकों की नवाचारी क्षमताएँ तभी उभरती हैं जब उन्हें स्वायत्तता, प्रोत्साहन और साझा मंच प्राप्त हों। रोहतक के विद्यालयों में शिक्षक स्व-प्रेरणा से शिक्षण नवाचार कर रहे थे, जिन्हें यदि संस्थागत समर्थन मिले तो वे अन्य विद्यालयों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन सकते हैं। इसके लिए राज्यों को चाहिए कि वे डिजिटल और मुद्रित मंचों की स्थापना करें जहाँ शिक्षक अपनी नवाचार

गतिविधियाँ, मूल्यांकन टेम्पलेट और शैक्षणिक प्रयोग साझा कर सकें। साथ ही, वार्षिक 'शिक्षक नवाचार मेले' का आयोजन किया जाना चाहिए जहाँ श्रेष्ठ शिक्षण प्रयासों को प्रस्तुत और सम्मानित किया जा सके। अनुभवी शिक्षकों की विशेषज्ञता का लाभ उठाने हेतु संरचित मेंटरशिप कार्यक्रम बनाए जाएँ। ये सभी उपाय एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की उस भावना को मूर्त करते हैं जो विकेंद्रीकृत और संदर्भ-संवेदनशील नवाचार को बढ़ावा देती है।

सतत, आनंददायक मूल्यांकन उपकरणों को प्रणाली में एकीकृत करें

पारंपरिक मूल्यांकन पद्धतियाँ, जो अक्सर तनावपूर्ण और अंक-केंद्रित होती हैं, अधिगम को बाधित करती हैं। रोहतक के विद्यालयों ने इस बाधा को पार करते हुए प्रारूपिक, अवलोकनात्मक और चिंतनशील मूल्यांकन पद्धतियों को अपनाया, जो न केवल विद्यार्थियों के अधिगम को समझने में सहायक रहीं, बल्कि शिक्षकों के लिए भी उत्साहवर्धक रहीं। इस दृष्टिकोण को व्यापक स्तर पर अपनाने हेतु नीति-स्तर पर ऐसे मूल्यांकन उपकरण विकसित किए जाने चाहिए, जो सरल हों— जैसे कि चेकलिस्ट, मौखिक कहानियों पर आधारित आकलन कार्ड, और शिक्षक के लिए चिंतन-पत्रक। इन उपकरणों को राज्य-स्तरीय एफ.एल.एन. ट्रैकिंग प्रणाली से संरेखित करना आवश्यक होगा, ताकि मूल्यांकन और अधिगम की निगरानी एकीकृत हो सके। इसके अतिरिक्त, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को 'अधिगम हेतु मूल्यांकन' के सिद्धांतों के अनुरूप पुनः रूपांतरित किया जाना चाहिए। जब इस प्रकार के उपकरणों को उचित संस्थागत समर्थन प्राप्त होता है, तो वे अधिगम की गुणवत्ता में वृद्धि के साथ-साथ मूल्यांकन को तनावमुक्त और आनंददायक बना देते हैं (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृ. 102)।

निष्कर्ष

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, खरावड़ और जी.एम. एस.पी.एस. सेक्टर 2,3,4 रोहतक में देखे गए आधारभूत अधिगम परिवर्तन केवल प्रेरणादायक नहीं हैं, बल्कि अत्यंत शिक्षाप्रद और सैद्धांतिक रूप से पुष्ट भी हैं। ये परिवर्तन एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 में वर्णित उस मूल दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं, जिसके अनुसार अधिगम तभी सार्थक होता है जब वह आनंददायक, समावेशी, विकासात्मक रूप से उपयुक्त और विद्यार्थियों के जीवन-संदर्भ से जुड़ा हो। ये उदाहरण यह दिखाते हैं कि सीमित संसाधनों वाले विद्यालयों में भी अद्भुत परिणाम संभव हैं यदि दृष्टिकोण विद्यार्थी-केंद्रित और सामुदायिक हो। इन विद्यालयों ने न केवल आधारभूत अधिगम परिणामों में सुधार किया है, बल्कि यह भी सिद्ध किया है कि जब शिक्षकों को सशक्त किया जाता है और समुदायों को सहभागी बनाया जाता है तो प्रणाली के भीतर से नवाचार उभर सकता है। नामांकन में वृद्धि, अभिभावक भागीदारी, सहपाठी मार्गदर्शन और दक्षता आधारित प्रगति जैसे परिणाम किसी बड़े निवेश पर निर्भर नहीं थे, बल्कि यह सैद्धांतिक समझ, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान, और नवाचार को प्राथमिकता देने के परिणाम थे।

ये प्रयास एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की समग्र दृष्टि को व्यावहारिक रूप में साकार करते हैं जिसमें कहा गया है कि प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचय नहीं, बल्कि पूरे विद्यार्थियों का पोषण होना चाहिए और विद्यालय देखभाल, जिज्ञासा और सहयोग के केंद्र बनें। रोहतक का अनुभव यह दिखाता है कि जब शिक्षक को 'शिक्षण डिजाइनर' के रूप में सम्मान मिलता है, परिवार को 'सह-शिक्षक' के रूप में जोड़ा जाता है, और विद्यार्थियों को 'सक्षम शिक्षार्थी' माना जाता है तब आधारभूत शिक्षा वास्तव में रूपांतरित हो सकती है। यदि इन नवाचारों का दस्तावेजीकरण, प्रसार और समर्थन सुनियोजित ढंग से किया जाए और यह प्रयास 'प्रतिलिपि अकंन' के बजाय 'स्थानीय अनुकूलन' पर आधारित हो तो ये मॉडल देश-भर के लिए दिशानिर्देशक बन सकते हैं। राज्य और केंद्र सरकारें सहपाठी मार्गदर्शन को नीति में सम्मिलित कर, सूक्ष्म अनुदानों को लागू कर और संरचित अभिभावक संवाद को संस्थागत रूप देकर इस प्रकार की सफलताओं को विस्तार दे सकती हैं।

अंततः रोहतक की यह कहानी एक आह्वान है विश्वास का, परिवर्तन का और संभावना का। यह नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और विकास भागीदारों से आग्रह करती है कि वे सीमाओं से परे देखें और हमारे सरकारी विद्यालयों में निहित अपार क्षमता को पहचानें। यदि इस क्षमता का उचित दिशा में उपयोग किया जाए तो एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की परिकल्पना को प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में वास्तविकता बनाया जा सकता है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.